

समस्त शरीरं कथं कुनकं समस्त इन्द्रिय इन्द्रियया आचारया केन इन्द्रियलिकायाव तय भवुं प्रति
शोभायाम् ॥ ५० ॥ विषया विनिवर्त्तने निराहारस्य दहिनः ॥ रसवर्त्त रसो यस्य परदृष्टानि वत्तने ॥ पर
॥ गोस्मिं पुरुषमनि राहारयातु गव विषयसमस्तं धर्मं धर्मं नो इव रसतो लताव परमात्मा खनगव
रसपनि लिहायाव वन इव ॥ ५१ ॥ यतः कोऽपि को नैय पुरुषस्य विवक्षितः ॥ इन्द्रियाणि प्रमाथीनि
हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ५२ ॥ हे अर्जुन गोस्मिं पुरुष पण्डितं नियमया कथं यथा इन्द्रियं न समस्तमाव
कुर्व मनगुलि वलनं मोचकीव ॥ ५३ ॥ तानि सङ्गोऽपि संप्रस्य युक्त आसीत मत्पर ॥ वशं हि यस्य
न्द्रियाणि तस्य वृत्तावतिष्ठिता ॥ ५४ ॥ अपनि इन्द्रिय सकलं संयमया गव युक्तिन केवलं जेभावनाया
गव चोनिव इन्द्रिय सकलं वसेतु लोभस्यमा बुद्धिप्रतिष्ठित भाव ॥ ५५ ॥ ध्यायते विषयान्युसः
संगतं वृत्तं जायते ॥ संगतं संगो यते कामः कामा लोभो मिजायते ॥ ५६ ॥ समस्त विषयं ध्यानं यो गव
वोक्तं पुरुषया अविषय पनिसक संग जाय रपीव संगनं काम जाय रपीव कामया केन को भ
जाय रपीव ॥ ५७ ॥ क्रोधा दुर्वृत्ति संमोहः संमोहात् स्मृतिविभ्रमः ॥ स्मृतिभ्रंशं बुद्धिनाशं बुद्धिनाशं

त्वणरपति ॥ ६३ ॥ क्रोध संमोह दशव सस्मोहन डे जगुलिस चान्तिजुव डे जगुलि सान्तिजुव बुद्धिना राजु
 युव बुद्धिना राजु रजव मोयुव ॥ ६३ ॥ राग द्वेष विषुक्तस्तु विषयानि विषये श्वरन् ॥ आत्मवश्य विषये यात्मा प्रद
 धम विगच्छति ॥ ६४ ॥ राग आ द्वेष चने योजर पाव तया इन्द्रियने विषय सत्त्व लर पंजुयुव आत्मान वश्य
 यायुव श्वगुलि आत्मान प्रसाद लायुव ॥ ६४ ॥ ॥ प्रसादे सर्व दुःखानां हानिरस्योपजायते ॥ प्रसन्न चे
 त्ततो ह्यशुभुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥ प्रसादस्तुने समस्तुने समस्त दुःख हानिजुव प्रसन्नचित्तं
 या बुद्धि शीघ्रं प्रतिष्ठादते ॥ ६५ ॥ ॥ नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ॥ न चाभावतः शान्तिर
 शान्त्युक्तः सुखं ॥ ६६ ॥ मयोजलप्रसंया बुद्धिमरु युक्तमया कल्पंया भावनां मदु भावनां मदु संपा
 शान्तिमदु शान्तिमदु संपा सुखग धेद इव ॥ ६६ ॥ ॥ इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनो नुबिधीयते ॥
 मदस्य ह प्रतिपुतां वायुन्नीवमिमो भसि ॥ ६७ ॥ इन्द्रियवचलन चरत पंजुव संपा गोपुलि मनन
 यान् श्वगुलि मंथया प्रबुद्धि हरर पावयनो गोतो धे वायुन लख स नाम द्वा चकं चकं यजार्थे

राम
 १५

॥ गतस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ॥ इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेष्वस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ हे अर्जुन
अगुलिका रणया केन इन्द्रियसकले इन्द्रियया व्यापारसमहोयलिका यफत गव धया प्रज्ञा प्रतिष्ठा धाय
॥ ६९ ॥ ॥ यात्रिशा सर्वभूतानां तस्या जागर्तिसंयमी ॥ यस्या यागुतिभूतानि सानि शापयतो मुने ॥ ७० ॥ समस्त
प्राणिपणिस गोगुहिरात्रिजुल तत्वज्ञान अगुहिरात्रिस संयमी ह्येन जागर्तिया युव गोगुहिरात्रिस संसार
स भूत प्राणिन जागर्तिया यु अगुहिरात्रिनु निपतिसेन बानीव ॥ ७१ ॥ ॥ आदृष्ट्यमानमचल प्रतिष्ठं सु
दमायः प्रविशन्नि यद्वत् ॥ तद्वत्कामाय प्रविशन्नि सर्वे संशान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७२ ॥ विहाय कामान्यः
सर्वो सुमर्षि रतिनिस्पृहः ॥ निर्भीको निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ ७३ ॥ परिभूस्मजुव चंचलमजुव भिन
कं वा उः समुद्रसलं खंडु हा वयाव गभे धये कीम समस्तन धयं या के दुहाव इव इव धयं शान्तिजुमुव का
मनाया क कामी ह्यं मखु केवलेश्वर कामना नया क ह्यं कामी धाय ॥ ७४ ॥ गो ह्यं पुरुष ए समस्त कामना तोल
ताव सुने ईछामया क कर्मवर लपाव जुईव माया अहंकार मधु धयं पुरुष ए शान्तिगुलिला इव ॥ ७५ ॥
॥ पपात्रा ह्यस्थितिः पार्थ नैना प्राप्य विमुह्यति ॥ स्थित्वास्यामन्तकाले पिवन्निर्वाणमृच्छति ॥ ७६ ॥ ॥

इति भगवद्गीता सूक्तनिबन्धसुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ ह्ययं सीते कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ॥ तत्किं कर्मघोरे मानिना जयसि केशव ॥ १ ॥ ह. अर्जुनः श्वगुलिब्रह्मया स्थितिं ध्याय. श्वस्थितिं लातः श्वतो लते मते च. श्वगुलि स्थितिं संवल लयाव चोक्तं स न अतः कालस ब्रह्मनिर्वाणला पुव निश्चयधकं श्रीकृष्णं अर्जुन कनं शोकस लुकुन विद्याव चोक्तं अर्जुनः श्वसांख्ययोग उ पदेश विद्याव श्रीकृष्णं उ द्वा र जा तो व क संजय नं धृत रा बु राजा कानं ॥ २ ॥ ॥ इति सांख्ययोगो ॥ ॥ अर्जुन नं श्रीकृष्णया के कालं ॥ हे परमेश्वर कर्मणः कर्मदात्रे हलपो लया अने न बुद्धि अतया यमजिव श्रेष्ठ अत्यन्त मु ल अये नं ग्या कृपु कर्म स छा य जो जलया विष्णो ज हे केशव ॥ १ ॥ ॥ व्यामिश्रे नैव वा कान बुद्धि मोह य सीव मे ॥ तदेकं व दनिश्चित्य येन श्रे ह मा पु यो ॥ २ ॥ बुद्धि ग कर्म योग नेता दु बा क्य न जि बुद्धि मोह या त हलपो ल से न श्व नेता स कृता परिहृ त्र या श्व के उ वि विद्या य माल श्वगुलिव स्तु न जि न मो स ला य जी पु व ध कं अर्जु न न दु ल थ ले ॥ ३ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ लोके स्थि विधानि हा उ रा प्रो क्त म यो न य ॥ तान योगे न सा

लि २

राम
१६

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ दयकलं धुसंसारसनेता प्रकारनिष्ठा श्रौयाद्भवजिन हे पाप
मदुःखं ज्ञानं कुतुसा विसेषमनिसततज्ञानं तुलियोगन कर्मयोगन योगिपनिस ॥ ३ ॥ ॥ न कर्मणा मणा म
नारम्भा नैः कर्मफलपूरको ॥ न च स न्यसना देव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥ कर्मकृपा आरंभमया स कर्म
दयके मज्जिव पुरुषन धिक् अभ्यासन योगया जन सिद्धिलायी व निश्चय अतिनिमित्तन कृपा क
र्मतो लते मते व ॥ ४ ॥ ॥ न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्य कर्मकृत ॥ काये ते स्ववशः कर्म सर्व उ
त्पत्तिर्जगते ॥ ५ ॥ कर्मतो लते स्वविस्तिर्गुलिहिनं कदाचित् सुनानं मरुत्थ व व श मनुयाव सक
लं पुतिया गुणन कर्मयातकी व ॥ ५ ॥ कर्मन्दिषा विसेषमप्यभ्यासे मनसात्मन ॥ इन्द्रियां धी
नि मूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥ अस्मिन् कर्मन्दिष्य वलन वश्यया उ मनने विषय लुमज्जव
तुया विव धुसं महा मूढ ध्याना म मिथ्याचार धाय ॥ ६ ॥ ॥ यस्मिन् दिष्या शिमन सानियम्यारभते ज्ञा
न ॥ कर्मन्दिष्यैः कर्मयोग म सक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥ अस्मिन् इन्द्रिय मनने वश्यया उ कर्म आरंभ
यायी व हे अर्जुन कर्मन्दिष्यन ध सक्त नुर सांभु ॥ ७ ॥ ॥ नियतं कुरु कर्म त्वं कर्मण्यो मोक्षकर्म

॥८॥ सत्कर्म सदा कृयाव हन कर्म मया ययाति न याय कर्म श्रेष्ठ शरीर धर रपे हन रा ये जीयी व कर्म म
 या से ॥८॥ यथा धा कर्म एत न्यत्र लोका यं कर्म व धनः ॥ तदर्थं कर्म को ने य तु क्त सङ्गः समाच ॥८॥ विष्णु
 यात निमित्त न मेले कर्म या य ग्या निष निसे न शो क सकले कर्म न विद्या बत या कु नं विष्णु यात नि
 मित्र न कर्म या व हे मर्तु न कर्म या फल तो लाता व ॥८॥ ॥ महा यज्ञाः पुजा सृष्ट्या पुरो वा च पुजा पतिः
 अनन पु स विष्णु धर्म मेव यो तिष्ठ काम धुक् ॥१०॥ यज्ञ या पु जा सृष्टि या जग व कृपा व ह्या न आ शा द
 य क ला ध यज्ञ न ह्य प नित व ध जग व यो दु हे देव मनि ध यज्ञ ध म वि काम धे नु सो व ॥१०॥ ॥ देवान् भाव
 यता मे न दा स्य ते यज्ञ भाविताः ॥ परस्य रं भाव य न्नः श्रेयः पर म वा प्यथ ॥११॥ हे पुजा पति दे व न भि कु
 भि कु भो ग विर्य वि ह्य प नित यज्ञ न ल स ता या व ध्व न्न दे व नं विद्या गु लि दे व या न म को सं ग्व ह्या न
 न ले श्री सा पु धा य ॥१२॥ ॥ इष्टा भोगा कि वो द वा दा स्य ते यज्ञ भाविताः ॥ ते द ज्ञा न्न पु दा ये त्यो यो भु
 क्ते न न प व सः ॥१२॥ यज्ञा वि का शिनः सन्ता मु च्य ते सर्व कि लि मेः ॥ मु मु त्त त त्वे य मा या ये प व ता त्म

राम
 १७

कारणात् ॥ १३ ॥ अथ निसेन पश्यालेकः अन्तरसमस्तयापनं ओपनि तोलतीव ओपनि सेन प्रापनल गोप
निसेन धमयाता केवलजाधुयाव नवपति ॥ १३ ॥ ॥ अन्त्राक वन्निभूतानि वज्जीत्यादन्तसंभवः ॥ यज्ञा
इव तिमज्जो न्या यज्ञः कर्मसमुद्रवः ॥ १४ ॥ अन्तेन दश्व प्राणियनि सेयन अन्तेन दुव पशेन दयिव मेव
यज्ञ दयि आकर्मण ॥ १४ ॥ ॥ कर्मवृत्त्याद्रव विदि सुखाक्षरसमुद्रव ॥ तस्यात्मवैगतं वृत्तं नित्यं
यज्ञे प्रतिष्ठितं ॥ १५ ॥ कर्मवृत्त्यावा केन दुव वृत्त्या अविनाश ह्यया दयिव धर्मेन समस्तं थाय स
वज्जव सदा वृत्तं यज्ञसवो न ॥ १५ ॥ ॥ एवमुवर्तिनं च क्क नानुवर्तयती ह्यः ॥ अथायुरिन्द्रियाणामो
नाद्येवार्थसजीवति ॥ १६ ॥ भुतपनिस प्राणियनिस पुहवार्थसिधयके निमिर्त्तिन परमेश्वर एव गुलित्व
क्रियात धमया कल्लेया चागुलि व्यर्थं धातु शिष्टयस लय जुवत्त व्यर्थं न चाक ह्य अज्जु न धके श्रीकृ
ष्ण न कने ॥ १६ ॥ यत्त्वात्मरतिरेव स्या दात्मतुष्टं श्रमानवः ॥ आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते
॥ १७ ॥ ॥ वत्तं यालय आत्मास आत्मा संतुष्टि आत्मासं संतोष धमया पुकार्यं पुनालो प्राप पुण्य नमपु
ड ॥ १७ ॥ ॥ नैव तस्य कृतेनार्थं नाकृते नेह कश्चन ॥ न चास्मत्संभूतेषु कश्चिदर्थव्यापश्रयः ॥ १८ ॥

आत्मज्ञानीपुहषमाकर्मयाजनं पुण्यमदु कर्मयानं पापे मदु अतएव मोक्षलायसदेवन अनेकविप्र
 यायिव श्वेतपाकारणन कर्मयाजव देवसत्तुष्टयाजव विप्रमोचके मोक्षस प्राणिमात्रपा त्याश्रमदु भक्त
 वेदनधाव ॥१८॥ ॥ तस्मादसक्तः सततं कार्यकर्म समाचरे ॥ असक्तो सावरन्कर्म परमाप्नोति पूतमः ॥
 १९॥ अगुलिप्रकारण ज्ञानिनुयाव संगतो लताव नित्यनेमि त्रिक काम्य कर्मयाव छिन चित्र शुद्धिज्ञा
 न दस्तुनं मोक्षलायीव ॥२०॥ ॥ कर्म एव हि संसिद्धि मास्थिता जनकादयः ॥ लोकसंग्रहमेवापि
 संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥ कर्मयाजव सिद्धिलातं जनक राजापनिसेनं थथे लोकार निमिर्त्तिन
 कलशब्दो मया मे कर्मयाव ॥२०॥ ॥ यद्यदा वरति धृष्ट स तदेवेतरो जनः ॥ स यत्पुमाणं कुरुते लो
 कस्तदनुवर्तते ॥२१॥ तव ह्यंजन न ग्वगुलियात आगुलिकर्म मेव जननं यापुव ग्वगुलि ईश्वर
 ए प्रमाणयात आगुलि लोकने प्रमाणयायीव ॥२१॥ ॥ न मेवार्थास्तिकर्तव्यं त्रिस्तुलोकेषु किंचन ॥
 नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्तएव च कर्मणि ॥२२॥ हे अर्जुन जिघास कर्म हुमदु स्वर्गमर्त्य पाताल दुष्टि
 ने लायवस्तु सं इष्टामदु मलाजवस्तु हुमदु अर्थेन कर्मयाज लोकार निमिर्त्तिन ॥२२॥ ॥

राम
 १८

मदिसुहृन्वर्त्तयं जानु कर्म एतं दितः ॥ मम वत्प्राप्तुवर्त्तने मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ २३ ॥ गोवेलसजिवर्त्तलया
वमयो न कदाचित् कर्म स अलास अलास मदयके जितस्यो नीव वमनुष्य वनि हे मनुज न स क
लसेनं कर्म मयायीव ॥ २३ ॥ ॥ उत्सीदेयु रिमे लोका न कुर्वी कर्म वेद हं ॥ संकरस्य च कर्त्तव्या
सुपह न्यामिमाः प्रजाः ॥ २४ ॥ ॥ प्रजापति सेन जवदुः खलायुव जाति विचार मदुन जिन कर्म म
या सुनं अनेक जाति या कर्त्तव्या प्रजापति पुन कर्त्तव्या ॥ २४ ॥ शक्राः कर्म एव विहासा य
था कुर्वन्ति भारत ॥ कुर्यादि हास्तथा शक्र श्रुती पुलोक संग्रह ॥ २५ ॥ मूर्ख पति सेन कर्म फल
स मम तया व काय आदि न दय माल धकं गथे कर्म यात हे मनुज न मूर्ख पति सेन कर्म या
य उधे फल मर्म न या जव खान लोकार निमिर्त्तिन अवस्य कर्म माल ॥ २५ ॥ ॥ न बुद्धि मेदं
जनये दहानो कर्म सङ्किनां ॥ जोषये न सर्व कर्माणि विहातुक्तः समावेरन ॥ २६ ॥ पाण्डु नेन सा
त्यतत्वे न सिव अतानि पति कर्म नु कया क्वोः अथ निस बुद्धि मेद याय मनेव आत्मतत्त्व

पदे सप्तकर्मसंख्येयं यथार्थं मया यकलं दृष्टं मया से ॥ २६ ॥ प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्व-
 शः ॥ अहंकारविद्यात्मा कर्त्री हि भूमि ति मन्वते ॥ २७ ॥ अज्ञानि स्मिन् प्रकृति या गुणैः इन्द्रिय समन्त नः श-
 ख्या लो किक कथा गुलिक र्म जुव गुलि जे न या ज्ञ ध के धा यी व दान अहं कार ए मूढ जु या व ॥ २८ ॥ त-
 त्व वि तु म ह वा हो गुण क र्म वि भा ग योः ॥ गुण गुणे प्रवर्तते इति मत्वा न सृजते ॥ २९ ॥ तत्त्व सि व स्मिन्
 र्म अर्जुन गुण क र्म ने तां गुण अ गुण स वो ड आत्मा चान स र्पु ध के भा ल या व इन्द्रिय गुलि गण स-
 रत्त म जु व ॥ ३० ॥ ॥ प्रकृते गुणैः समूहाः सृजते गुण क र्म सु ॥ तौ न तत्र विदो मं दान क र्म वि न वि चाल य-
 त ॥ ३१ ॥ आत्मा ज्ञानि न अज्ञानि प नि के व ल फल जु को त्व ॥ म नि बुद्धि प नि ध प नि स बुद्धि मे द या य म ते
 व दाने प्रकृति या गुण मूढ जु या व गुण क र्म से व जु को र य जु या व वो ड प नि ॥ ३२ ॥ ॥ मयि स र्वाणि क र्मा-
 णि संन्यस्या आत्म चे तसा ॥ नि राशी निर्म म मो भू वा यु ध त्व वि गत ज्वरः ॥ ३३ ॥ आ ध्या त्म स चे त त या व
 जे के सम त्त क र्म त या व निः काम जु या सम ता तो ल ता व अ न र्था मि या अधि न जु व जिन क र्म या य नाल

तम
 १८

पावपुहयावसन्नापमदयकाव ॥१०॥ ॥ येमेमतमिदंनित्यमनुतिष्ठन्निमानवाः ॥ अहो नोनसुय
नोः सुखं नेतेपिकर्मभिः ॥११॥ गोपनिमनुष्यपनिसेनं जेधगुलिसतमानययायिव सदाऽजिववन
स अहो वनजीदोषे मिहानमलो कपनि धर्म अधर्म कर्म न धपनि तोलतयिवा ॥१२॥ ॥ येत्वेतद
त्यसूयनो नानुतिष्ठन्निसेमतं ॥ सर्वज्ञानविमूढज्ञान विहितज्ञानयेतसः ॥१३॥ गोपनिमनुष्यपनिसे
न निनिन्यायाज्ञव जिमत मयायीव आपनि समस्तज्ञानं तोलतु कुक येनामदु क नसिसे ह अज्ञ
न ॥१४॥ ॥ सहशवेष्टेस्वस्थाः प्रकृतेः तौ नवानपि ॥ प्रकृतिया निभूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥१५॥
गुणदोष सिवत्मानवन्तस्मानं थवद्वया प्रकृतिया कर्म संस्कार्या अधीन स्वभाव अज्ञानिधर्मजुय
व अज्ञानिपमिजु कोन मया क सकले बाति प्रकृतिया वश इन्द्रियनिग्रह पागुन हगुन प्रकृतिपुतके
मंजीव ॥१६॥ ॥ इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थ रागद्वेषो व्यवस्थितो ॥ तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपथिनो ॥१७॥
४ ॥ समस्त इन्द्रिय अर्थ स प्रीति अप्रीति नेता दव थैताया वशगुयाव खानमो भवनीत् वलं या ध्वनेता

प्रीतिविघ्नयाकथयनि॥३४॥ ॥ श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितान् ॥ स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो
 न वाचकः ॥३५॥ स्वधर्मं भृगुहीनमुरसां वृशस्तमेव याधर्म्यं सांगया केन ध्रुवधर्म्यं पुद्गलसिङ्गनं स्वर्ग
 लोकपरधर्म्यं भयविविधविद्वयाङ्गवतयान ॥३५॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अध केन प्रपुत्रोऽयं पापं च र
 तिपूह्यः ॥ अनिहन्तं पिबा हर्षेण बलादिव निवोजितः ॥३६॥ अर्जुन ननु केन हे कृष्ण वन उत्पत्तिं नु
 वस्तुनान् यातकान् पुरुषान् पापयातं मय मय बलन गतान् सेवकं ज्ञायातं कथं शोभे कने माले
 धकं भालं ॥३६॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कामप्यक्रोधपक्षरजोगुणसमुद्भव ॥ महाशोभो महायाम्ना वि
 छिनमिह वैरिण ॥३७॥ अध उवाच श्रीकृष्ण न अर्जुन कन ॥ काम क्रोध रजोगुणन उत्पत्तिं नु व अदिक
 यकृत् महापापिष्ठ अस्सीर थुरया परमशत्रुसय माल ॥३७॥ ॥ धूमनादि यने वक्रियं धाद शोभलेन
 व ॥ यथात्वेनाचो गभस्तथातेदमावृतं ॥३८॥ आचुतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिण ॥ काम नृपे
 ण को नृप दुःपूरेण नलेन च ॥३८॥ कूनमिममि नृपु कथं क्रमकेन बुलुकु थं विन गभं गभं
 लोकपुव थं थं थं थं कामन शो न लोक पुयाव चीन ॥३९॥ कामदेव रूपं सदा उ शत्रुन शानि

राम
 २०

स्यात्तान् लोकेषु लहे अर्जुन गुलिनयान नगा कथयिष्ये अग्रिमुवाच ॥ २२ ॥ इन्द्रियोणिमनोबुद्धि र
 म्यादिष्ठानमुच्यते ॥ एते हि जो हयत्वे ब्रह्मज्ञानमावृत्त्यदेहिने ॥ ४० ॥ इन्द्रियमनबुद्धिश्च कामया आश्रयश्च का
 मनदिव्यज्ञानलोकेषु यावद्विद्यमाननापामनुष्ममोहयागतल ॥ ४० ॥ ॥ तस्मादेवमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भ
 रतर्षभ ॥ वायानं प्रहिण्येन शान्तविज्ञाननाशनं ॥ ४१ ॥ अलीकोरुणं हन इन्द्रियनि कषाये शपयागवहे
 मस्तवं शयाश्रेष्ठ अर्जुन धनं लिपापिष्ट कामदेवपुत्रके गयिष्ये तत्त्वज्ञानं शास्त्रज्ञानं पुरतकावयो
 क्स्मि ॥ ४१ ॥ ॥ इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेत्यः परमनः ॥ मनसस्तु पराबुद्धि र्ये बुद्धः परतत्तुमः ॥ ४२ ॥ प
 लिप्तयनितेन शरीरयासिने इन्द्रियश्रेष्ठ कंधाल इन्द्रिययासिने मनोयासिने बुद्धिश्रेष्ठ बुद्धियासि
 ने श्रेष्ठ आत्मानं शरीरवत्तस्मै मोहयात ॥ ४२ ॥ ॥ एवं बुद्धेः परं बुद्धास्तत्तत्तात्मानं मात्मना ॥ ने हि शत्रु
 महां वाहो कामरूपं दूरासद ॥ ४३ ॥ कामशत्रुजय रपि हे अर्जुन दुःखेन लायमजीवत्यं ध कंधाल ॥ ४३ ॥
 धर्मे बुद्धिया श्रेष्ठ आत्मासि याव आत्मा स्थीरयागा वधवमात्मा ॥ ॥ इति कर्मयोग ॥ ३ ॥ ॥ इ
 ति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयो
 अध्यायः ॥ ३ ॥

इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्या-
 यः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययं ॥ दिवसान्मनवेष्टाहमनुरिक्षाकवे-
 बुवीत् ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अर्जुन कन, अथ कर्माङ्गुलयोग, हवस, सूर्य, जिनकण, गोलन, नरु, मफुरक-
 योग, हनो, अथ योग, सूर्य, न, थको यमनु, काना, मनुन, थयोग, थवकाय, इशावा, कन, थक, सैनयन, थ-
 तशु, कन, थक, वैश्या, यनन, जिनमेन, यराजाकन, अथिसौ, कतिन, सौनको, दि, अथिकन ॥ १ ॥
 पंचपरं यराजात्र, मिसं, राज, थयो, वि, दु ॥ सकाले नह, महता, योगेन, थः, परन्तप ॥ २ ॥ थथ, परपराय-
 न, वचयोग, राज, अथि, प, निसेन, सि, व, अथि, योग, अथि, क, काल, कु, लो, हे, शत्रु, श, ना, य, यो, क, स्मा, अर्जुन, थ-
 क, श्रीकृष्ण, अर्जुन, ज्ञाते ॥ ३ ॥ ॥ सपरायं यमयाते प्र, योगः प्रोक्तः पुरातनः ॥ न त्वांसि मे सखा चेति, रहस्यं
 तेन दुर्नम ॥ ४ ॥ ॥ हानिसे दयाव, वो, अर्जुन, लि, योग, जेन, थ, नि, क, गो, छन, जे, के, भक्त, जुव, हनो, जे, या, सा, छ-
 जुवने, अर्जुन, योग, उत्तम, गु, लि, थ, के, श्रीकृष्ण, न, थ, ल ॥ ५ ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ नृप, वरे, भवतो, जन्म, पर-
 जन्म, विवस्वत ॥ कथमेतद्विजानीया, त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ६ ॥ ॥ धनं, लि, अर्जुन, न, न, डे, न, हे, श्रीकृष्ण

राम
 २१

सुखलपोलसज्जन्मपुगस, सूर्ययाजन्मद्रवा, धजेनगथैसियलुलपोल, सेनं, ज्ञपा, सूर्यकनध
कंधा ॥ ४ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतानि जन्मानितवचानुन ॥ तान्यहं वेदसर्वलि, नत्वं
बलधरत्नम ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णमनंभालं, हेअर्जुन, अदिकजन्मवनो, छनंअदिकजन्मवनो, ओसकले
उविश्यायाप्रभावन, जिनसिया, छने, अविश्यायावसनंमसिला ॥ ५ ॥ ॥ अतोविसनव्ययात्मा, भूता
नामीश्वरायिह न ॥ पुकृतिसामधिकाय, संभवाम्यान्ममायया ॥ ६ ॥ जितुयाकेनंउत्पत्तिमजुव, अ
व्यय, व्ययगयावपुतकेमजीव, समस्तप्रालिया ईश्वर, जुयाव, थवप्रतिसचोअव, थवथवआत्माया
मायानं, जन्मकायधकंधाल ॥ ६ ॥ ॥ अदायदाहिधर्मस्य, ग्लानिभवतिभारत ॥ अतुत्यानेमधर्मस्य
तदात्मानंसृजाम्यहं ॥ ७ ॥ ॥ अवैलस, अवैल, धर्मकृ, अव, वने, हेअर्जुन, अधर्मकृ, छिनंजुयाव, ओओ
वैलस, जेनं, अवतार, काया ॥ ७ ॥ ॥ परित्राणायसाधूनां, विनाशायचदुःकुतां ॥ धर्मसंस्थापनाय
यसंभवामिपुनरुपुन ॥ ८ ॥ ॥ साधुपनिरक्षायोअव, यायेयाता, पापिपुपनि, मोचकेयात, धर्मस्थिरया
य, निमिर्दिने, पुगपुग, पतिजेन, जन्मकाया ॥ ८ ॥ ॥ जन्मकर्मचमैदिव, मेवयोवेत्तितत्त्वतः ॥ त्वत्त्वे

देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोर्ज्जनं ॥ ८ ॥ हे अर्जुन जे जन्म कर्म दिव्य थये तत्त्व पूर्व कर्म गोचर न
 सिल, ओत्पन्न भवे शरीर, तोल ताव, हन के, जन्म काय सुमाल जे के लीन, जुल व धिवा ॥ ८ ॥ ॥ वीतराग
 भये क्रोधा, मन्मथामा सुपाश्रिता ॥ चहवो शानतयसा, पूजाम द्वावमागताः ॥ १० ॥ धृतिभय, क्रोधता
 लताव, संसार सकले, जयमय जुवपनि, जिआश्रय पाग, जे का जे नपनि, शानतयस्थान, पवित्र
 जुवाव, जेवउ जुल ॥ १० ॥ ॥ येय धामा उपपद्यते, तांस्तथैव भजास्यहं ॥ ममवे न्मानुवर्तते, मनुष्याः
 पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥ ॥ यपनि सेने जे के, सुकर्म ननिः कामन सेवा पायिव, ओत्पन्न ओत्पन्न, ओत्पत्तिन फ
 ल विधिय, जे गुल, लस, सकले, वोन, इन्द्रियया, सेवा पागन, जेवा जुल ॥ ११ ॥ ॥ को संतः कर्मणा
 सिद्धिं यजन्त इह देवताः ॥ निष्ठं हि मानुषे लोके, सिद्धि भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ कर्म या फल, इष्टा या
 कपनि, इन्द्रमादिन, देव पूजा या विव, जे पुत्यन, मख रुपनि, ओपनि समनुष्य लोक त, कर्म
 न जाय रपु, फल सिद्ध जुयीव ॥ १२ ॥ ॥ वातुर्बसामया सृष्टं, गुण कर्म विभागणः ॥ तस्यैक तौर
 मविमो, विष्णु कर्ता रमययं ॥ १३ ॥ ॥ ब्रह्मण, इन्द्रिय वैश्य, शूद्र, श्रवता जाति, सृष्टियाग गुणक

राम
 २२

श्वसंसार. श्वपनि. तापविषाचवोक्त. नाशावापृथिव्योरिदमन्नरं हि. व्याप्तं तैर्यैकनदिशश्चसर्वाः
॥ हृद्वापुतं नूपमुगुंतवेदं. लोकत्रयं प्रथितमहात्मन ॥ २० ॥ आकाश. सकलं. पृथीसकलं. अन्नर
सकलं. व्यापरापावचो. के. के. स्मन. दशदिगं. व्याप्तं सोयाव. अद्भुतनूपम. महाउग्रह. स्वगुलिलोकं. व्यथा
विव. वेन. हे. ईश्वर ॥ २० ॥ ॥ अमीहित्वां सुरसंज्ञाविशन्ति. के. विद्मताः प्रांजलपौगुणनि. गह्वरीसु
क्तामहर्षि सिद्धसंज्ञाः. लुवन्ति त्वां तुतिभिः. पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ धूमनिदेव. सकलं. देव. गुलि
स्त्रि. न. ग्यागवचो. गुलीस्त्रि. न. हाथजलपाव. तुति यो गवचो. स्वस्तिवाचना. ज्ञायाव. महाकोविगण. प
निसे. सिद्धगण. पनि. सेन. के. के. तुति यो गवचो. अनेकतुति. परपाद ॥ २१ ॥ ॥ हृद्वादि त्वावसवायच
ध्या. विश्वेस्त्रि. नो. महत. शोभ. याश्च ॥ ग. अर्च. यक्ष. सुरभि. दसंज्ञा. वी. क्षे. ती. वि. नता. श्वे. व. स. ह.
हृद्गण. आदित्यगण. वसुगण. साध्यगण. विश्वदेव. अश्विनी. वायुगण. तुभितगण. ग. अर्च. यक्ष. या.
णि. सिद्धगण. अ. सकलं. देव. के. के. ह्याजुयाव. चो. रव. ग. ॥ २२ ॥ नूपम. हते. व. दु. व. के. नेत्र. महाबाहो. व. दु. वा. दु.
ह. पां. दा. व. दु. द. रं. व. दु. द. म्. का. करालं. द. म्. लो. काः. प्रव्य. धिता. स. था. हं ॥ २३ ॥ अनेकनूपम. अनेक. र. हा. ल. अने
क. मि. खा. ता. हा. क. ला. हा. त. अनेक. ख. ल. अनेक. तु. ते. अनेक. पे. त. अनेक. व. हा. न. खा. या. वि. ग्या. ग. दु. अने

क कटक ग्या गुवचों, धपनिखगव जे ग्या गु॥ २३॥ ॥ नमः स्पृशंदी प्रमनेकवर्ष व्याप्ता न नंदी प्रविशा
 लनेत्रं ॥ ६॥ दृष्ट्वा हित्वा प्रव्य धितात रात्मा धृतिं न विद्या मिश्रं च विद्वान् ॥ २४॥ आकाशस व्यापलयाव तज
 दयाव अनेकवर्ष न व्याप्ता प्रजुव रत्नाल महातेज दयाव तातावाव भिरवा धधिं हं हं सायाव जे आत्मा सं महा
 भयदव धैर्य यां यं मफया ज्ञानि मदा जे हे विष्णो धका अर्जुन न धाल ॥ २४॥ ॥ दंष्ट्रा कराला निचते मु
 खानि ६॥ दंष्ट्रा कराला नल सन्निभा नि ॥ दिशो न जाने नल मे च शर्मा प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ २५॥ याता
 हाकत वधा ६॥ धिखाल सोयाव महाप्रलय या अग्रि धे दशदिगं जे नमसे या सुखधाय सुखधाय छं नम
 मसे या हे देवेश जगत्संसार या निवास छलपोल प्रसन्न जयमाल ॥ २५॥ ॥ अमी वत्स धृत रघु स्य पुत्रा
 सर्व महैवाव निपात सं धे ॥ भीष्मो द्रोणः सुत पुत्र स्य धाके महास्पदी ये रवियोध सुरे ॥ २६॥ धपनिधृ
 त राघु या कायमनि समस्त राजा पनिस श्री सहित न भीष्म द्रोण कलह नो जे निस यो धो पनि प्रभुव
 न छे के दुहावला ॥ २६॥ ॥ वक्राणित त्वरमाण विरान्निदष्टा कराला निभयानका नि ॥ के विह्वल ग्राह
 शनाने रघु संदृश्यते चूर्मित हन्त मांगै ॥ २७॥ ॥ समस्त गणपनि छलपोल सखाल स हतासन दुहावर
 वातवधा जगद महाभयंकर खाल स गुनि जे न वास था जगद चो ६ गुलि छिन्न मोल जे को ज्ञेयाव पूरु जया

राम
 ५०